

गुरु नानक – सबद ४७

जाल मोह घस मस कर मत कागद कर सार ॥

राग सिरिराग, गुरु नानक, गुरु ग्रंथ साहिब, १६

जाल मोह घस मस कर मत कागद कर सार ॥
भाउ कलम कर चित लेखारी गुर पुछ लिख बीचार ॥
लिख नाम सालाह लिख लिख अंत न पारावार ॥ १ ॥
बाबा एह लेखा लिख जाण ॥
जिथै लेखा मंगीऐ तिथै होइ सचा नीसाण ॥ १ ॥ रहाउ ॥
जिथै मिलह वडिआईआ सद खुसीआ सद चाउ ॥
तिन मुख टिके निकलहि जिन मन सचा नाउ ॥
करम मिलै ता पाईऐ नाही गली वाउ दुआउ ॥ २ ॥
इक आवहि इक जाहि उठ रखीअहि नाव सलार ॥
इक उपाए मंगते इकना वडे दरवार ॥
अगै गइआ जाणीऐ विण नावै वेकार ॥ ३ ॥
भै तेरै डर अगला खप खप छिजै देह ॥
नाव जिना सुलतान खान होदे डिठे खेह ॥
नानक उठी चलिआ सभ कूड़े तुटे नेह ॥ ४ ॥ ६ ॥

सार: महत्वपूर्ण क्षणों में आगे बढ़ने से पहले ठहरकर शांति से सोचने से स्थिति को स्पष्ट रूप से समझने में मदद मिलती है। गहन चिंतन हमें ऐसे विकल्प चुनने में सहायता करता है जो हमारे मूल्यों के अनुरूप हों और हमें अखंडता और प्रामाणिकता से निहित कार्यों की ओर मार्गदर्शन कर सकें। अक्सर सबसे अच्छे उत्तर शांत मन से चिंतन करने पर ही मिलते हैं।

जाल मोह घस मस कर मत कागद कर सार ॥

सांसारिक मोह को जलाकर उसकी राख को स्याही में बदल दें। मन को कागज़ की तरह इस्तेमाल करें और उस पर सत्य का सार लिखें। यह जीवन में आत्म-परिवर्तन की उपमा है जिसमें बाहरी दिखावे को छोड़ सच्चाई को अपनाने पर जोर दिया गया है।

भाउ कलम कर चित लेखारी गुर पुछ लिख बीचार ॥

प्रेम को कलम और चेतना को लेख नी की तरह उपयोग करें। अज्ञानता से जागरूकता की ओर ले जाने वाले साधकों से समझ प्राप्त करें और अपने विचारों को दर्ज करें। यह संदेश हर प्रयास में कर्तव्यनिष्ठा अपनाने के लिए प्रेरित करता है।

लिख नाम सालाह लिख लिख अंत न पारावार ॥ १॥

अपने विचारों को लिखें और उनको व्यक्त करते रहें क्योंकि प्रकृति की दिव्यता को समझने की कोई सीमा नहीं है। (१)

बाबा एह लेखा लिख जाण ॥

हे ज्ञानी, आपने जो अंतर्दृष्टि प्राप्त की है उस समझ का उपयोग आत्म-चिंतन और विकास के लिए करें।

जिथै लेखा मंगीऐ तिथै होइ सचा नीसाण ॥ १॥ रहाउ ॥

ऐसे क्षणों में जहां निर्णय लेने की आवश्यकता होती है, विचारों से प्राप्त अंतर्दृष्टि के नेतृत्व में चुनाव से, सच्चाई ही प्रबल होती है। (१)(विराम)

जिथै मिलह वडिआईआ सद खुसीआ सद चाउ ॥

ऐसी जगह जहाँ महानता पनपती है, स्थायी शांति और आनंद का साम्राज्य है।

तिन मुख टिके निकलहि जिन मन सचा नाउ ॥

जिनके मन सत्य से जुड़े होते हैं और जो आत्म-चिंतन करते हैं, उनकी उपस्थिति संतुलन और शांति की छवि होती है।

करम मिलै ता पाईऐ नाही गली वाउ दुआउ ॥ २॥

सद्गुण उद्देश्यपूर्ण कार्यों के माध्यम से विकसित होते हैं न कि केवल बातों या आशीर्वाद पाने की कामना से। (२)

इक आवहि इक जाहि उठ रखीअहि नाव सलार ॥

एक विचार उठता है और दूसरा विचार गुम हो जाता है, अपने मन को जागृत करें और उन श्रेष्ठ विचारों को ग्रहण करें जो उत्थान करते हैं।

इक उपाए मंगते इकना वडे दरवार ॥

एक विचार भिखारी बना सकता है जबकि दूसरा किसी को भव्य दरबारों में उच्च स्थान पर बैठा सकता है।

अगै गइआ जाणीऐ विण नावै वेकार ॥३॥

अंततः समझ में आता है कि आत्म-चिंतन और सच्चाई के बिना बाकी सब व्यर्थ है। (३)

भै तेरै डर अगला खप खप छिजै देह ॥

अनिश्चित भविष्य के डर ने इतना व्यथित कर दिया है कि आपके शरीर की शक्ति लुप्त हो रही है।

नाव जिना सुलतान खान होदे डिठे खेह ॥

जो सुल्तान और सम्राट कहलाते थे वह भी अंत में मिट्टी में मिल गए।

नानक उठी चलिआ सभ कूड़े तुटे नेह ॥४॥६॥

नानक कहते हैं, आत्म-साक्षात्कार की उस अवस्था तक पहुंचो जहां सभी झूठे मोह और लगाव छोड़ दिए जाते हैं। (४)(६)

तत्त्व: गुरु नानक कहते हैं कि सद्गुणों को विकसित करने के लिए मेहनत और उद्देश्यपूर्ण कार्य की आवश्यकता होती है केवल इच्छा या खोखली रस्मों की नहीं। सच्चा परिवर्तन आत्म-जागरूकता से और भौतिक संपत्ति और अहंकार से अलग होने से आता है। इस स्थिति में एहसास होता है कि पहचान बाहरी मान्यता से जुड़ी नहीं है, इससे एक शुद्ध और स्वतंत्र जीवन जीने की प्रेरणा मिलती है।

पहलकदमी

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com